ग हो निदान

नागपुर। पारंपारिक जीवन में ज़्या जरूरी है? रोटी, कपड़ा, मकान यह तो कैदियों को भी मिलता है, लेकिन मनुष्य की और भी जरूरतें है। मनुष्य की जरूरतें भावना, मन, हृदय होती है। इसलिए कला और कारीगर के जीवन में अलग-अलग भूमिकाएं होती है। इसमें विकास निरंतर होना चाहिए। उसका लाभ सबको मिलना चाहिए, लेकिन यह विषमता बढ़ती जा रही हैं। यह बात राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सहसरकार्यवाह माननीय सुरेश सोनी ने डॉ वसंतराव देशपांडे सभागृह में आयोजित कारीगर पंचायत में कही।

उन्होंने कहा कि इच्छा इंसान को प्रेरित करती है। सबके विकास के लिए इच्छाओं को नियंत्रित करना होगा। इसके साथ उपभोग को भी संयमित करना होगा। कला भारत के अतीत में कला बसती है।यह आने वाली पीढ़ी को पता होना चाहिए। परंतु आधुनिक विज्ञान की वजह से ऐसा नहीं हो रहा है। कारीगरों की परेशानी को समझना पड़ेगा। उनके संवर्धन के लिए ज़्या उपाय करना चाहिए यह जानना होगा। उन्हें कच्चा माल कैसे मिले, उनके सामान की बिक्री हो इस दिशा में सोचने की जरूरत है। कारीगरों के लिए कला बाजार होने चाहिए। हर कला के अंदर संदेश होना चाहिए।

समाज का स्वभाव कुछ इस तरह है कि पहले लोग समझाने से समझ जाते थे, लेकिन अभी भुगतने से समझते है। निरंतर विकास के दो चरण होते है। एक परज़्परा है और दूसरा आधुनिकता है। विकृति पर प्रकृति की और प्रकृति पर सं संस्कृति की विजय निश्चित है। केन्द्रीय सड़क परिवहन व राजमार्ग मंत्री श्री नितिन गडकरी ने इस अवसर पर कहा कि लघु व्यवसायों और पारंपरिक कारीगरों को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। लोगों को जल, जंगल, जमीन और जानवर के आधार पर आजीविका पर ध्यान देना होगा। श्रद्धेय नानाजी ने विधि रूप के विकास विकसित करके इसे दिखाया है।

लोग रोजगार की खोज में शहरों से दौड़ रहे हैं। शहर में उन्हें कई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। महात्मा गांधी ने गांवों को समृद्ध करने की सलाह दी थी। लेकिन हमने इसे नजरअंदाज कर दिया है। उन्होंने अपने व्यावसायिक स्तर पर कारीगरों और विपणन के पारंपरिक ज्ञान से अच्छे साहित्य को विकसित करने की आवश्यकता व्यज़्त की। उनका कहना था कि कारीगरों की एक नई